उपसभापति : यह तो मुमकिन नहीं है।

श्री जसवंत सिंह : जी हां, यह तो मुमकिन नहीं है। ...(व्यवधान)...

श्री जसवन्त सिंह : मैं आपको बताऊं कि अगर उस वक्त if I had any knowledge कि इस वक्त वे आएं Just now, he is engaged in the other House. As soon as he is free from the other House, I have told him to please come and inform the House. We have nothing to hide. There is no ambiguity. Hon. Members are, of course, free to express what views they like to on what I say or fail to say. That is their right, certainly. But, as far as the Government is concerned, there is no ambiguity. We will abide by the court's judgment. The court has said, 'no activity on it', and that is what we will do.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shall we resume the discussion on the Motion of Thanks on the President's Address? Before that, the Finance Minister has to lay the Supplementary Demands for Grants (General) 2001-2002. Shri Yashwant Sinha.

SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS (GENERAL) 2001-2002

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YASHWANT SINHA): Madam, I lay on the Table a statement (in English and Hindi) showing the Supplementary Demands for Grants (General) for the year 2001-2002 (March-2002).

उपसभापति : शर्मा जी, आपका भाषण खत्म नहीं हुआ था तो कृपया आप भाषण जारी रखें।

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तरांचल): बहुत अच्छा भाषण होता है, सुनते रहिए जैसे पहले सुन रहे थे ...(व्यवधान)...

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे (गुजरात) : सुनो बैठकर। शांति से सुनो। ...(व्यवधान)...

उपसभापति : अभी भाषण सुन लीजिए, बाद में जिक्र करना।

श्री नीलोत्पल बसु (पश्चिमी बंगाल) : भाषण देने के अलावा और कुछ नहीं है।

श्री संघ प्रिय गौतम : सरकार तो है।

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS -Contd.

श्री महेश चन्द्र शर्मा (राजस्थान) : धन्यवाद उपसभापति जी, मैं प्रयत्न करूंगा कि परिवेश की गर्मी से मुक्त होकर अपनी बात कहूं। मैं चर्चा कर रहा था कि राष्ट्रपति के अभिभाषण में सांप्रदायिक सौहार्द, पंथनिरपेक्षता, अयोध्या का विषय, सरकार की स्थिति के बारे में जो कुछ कहा था वे आश्वस्तिक कारक थे। आज वैसा आश्वासन यदि समाज महसूस नहीं करता तो उसके क्या कारण हैं, उन कारणों में हमें जाना पड़ेगा। उपसभापति जी, हिंदुस्तान की तारीख में ऐसी कुछ बातें हैं जिन पर हमें विचार करना होगा कि जिन लोगों ने हमें मजहब के नाम पर मेजोरिटी, माइनोरिटी में बांटा उन्होंने हम पर कैसा अन्याय किया। हमारी अस्मिता को, हमारे अस्तित्व को उन्होंने दिग्भ्रमित कर दिया। उन्हें लगता है कि यह देश हम लोगों के रहने लायक नहीं है। द्विराष्ट्रवाद के आधार पर हमें अलग देश चाहिए और यह बात कहने वालों ने मौलाना अबुल कलाम आजाद को अलीगढ़ स्टेशन पर अपमानित किया था। महोदया, यह इतिहास की गहरी खबर है कि मौलाना साहब ने विभाजन को स्वीकार नहीं किया था और उन्हीं के मजहबी लोगों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया था। इसीलिए अलीगढ़ मुसलिम युनिवर्सिटी में जाकर भारतवर्ष के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कुछ सवाल पूछे थे। मुझे लगता है कि वे सवाल आज भी प्रासंगिक हैं, रिलेवेंट हैं, हमें उन सवालों का ठीक से जवाब देना चाहिए। महोदया मैं कोट कर रहा हूं स्पीचस ऑफ पंडित जवाहर लाल नेहरू वोल्यूम फर्स्ट, पेज 334, 24 जनवरी, 1948, I am quoting from the speeches of Pandit Jawaharlal Nehru, volume I, page 334, dated 24th January, 1948. "I have said that I am proud of all inheritance and ancestors who gave an intellectual and cultural pre-eminence to India. How do you feel about this past? विद्यार्थियों को पूछते हैं पंडित जवाहरलाल नेहरू। How do you feel about this past? Do you feel that you are also a sharer in it and inheritors of it, and therefore, proud of something that belongs to you as much as to me or How do you feel alien to it, to pass it by without understanding or feeling its strange thrill comes from the realisation that we are trustees and inheritors of this vast pleasure."

महोदया, राष्ट्र के नाते क्या हमारा इतिहास विभक्त है, राष्ट्र के नाते क्या हमारी विरासत विभक्त है? मैं समझता हूं राष्ट्र के नाते जिन्होंने हमारी विरासत को विभक्त किया है, मजहब के नाम पर किया है, उन्होंने उस मजहब को भी कलंकित किया है, उन्होंने उस मजहब से भी न्याय नहीं किया। उस मजहब के पैगम्बर मोहम्मद हिन्दुस्तान के बारे में जानते थे, उन्होंने एक हदीस में कहा कि हिन्दुस्तान से मुझे ठंडी हवाएं आती हैं। इकबाल ने अपने वतन का परिचय देते हुए कहा, मीरे अरब को आई ठंडी हवा जहां से, मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है। अब सवाल है कि मीरे अरब को ठंडी हवा जहां से आई, वहां पर लोगों को गर्म हवाएं क्यों लगने लगी? मैं अमीर खुसरो को पढ़ रहा था। उन्होंने भी यही कहा। अमीर खुसरो ने

- 144RS F—12-B